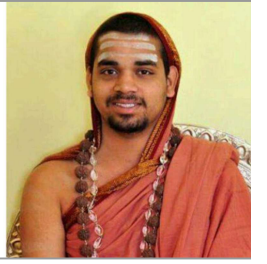


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



अनुग्रह भाषण

वेदांत के अध्ययन के लिए योग्यता

वेदांत का अध्ययन मनुष्य के कल्याण के लिए लाभकारी है। लेकिन वेदांत की शिक्षा ग्रहण करने के लिए व्यक्ति

का योग्य होना आवश्यक है। वह योग्यता क्या है? शास्त्रों और गुरु के वचनों में उसका अटूट विश्वास होना चाहिए। साथ ही, उसमें सांसारिक विषयों के प्रति पूर्ण अनासक्ति और ईश्वर के ध्यान में गहराई से लीन रहने वाला मन होना चाहिए।

उसे सबसे पहले इन योग्यताओं को प्राप्त करना होगा, जिनसे चित्त-शुद्धि (मन की शुद्धि) होती है। तभी वह वेदांत की शिक्षाओं की बारीकियों को समझ सकता है।

पुराने समय में, गुरु शिष्य की अच्छी तरह जाँच-परख करने के बाद ही उसे वेदांत की शिक्षा देते थे। ऐसा 'प्रश्न उपनिषद्' में देखने को मिलता है। ऋषि पिप्पलाद ने वेदांत सीखने आए छह लड़कों से कहा कि वे पहले एक साल तक कठोर तपस्या करें। ऐसा उनकी क्षमता को परखने और उनके चित्त की



शुद्धि के लिए किया गया था। एक साल पूरा होने के बाद, ऋषि ने उन लड़कों को वेदांत की शिक्षा दी। उन्होंने शिक्षा को अच्छी तरह आत्मसात किया और धन्य हो गए।

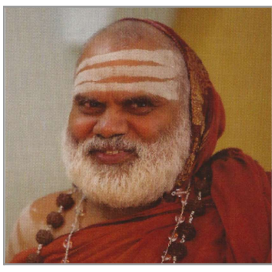
यदि किसी अयोग्य व्यक्ति को यह सिखाया जाए कि "सब कुछ ब्रह्म है", तो वह न केवल इसे समझने में विफल रहेगा, बल्कि इसका गलत अर्थ भी निकाल लेगा। उसका अधूरा ज्ञान और अहंकार उसे यह समझने से रोकेगा कि वह इसके योग्य नहीं है। असल में, यह उसे नरक में भेजने जैसा ही होगा।

अज्ञस्यार्धप्रबुद्धस्य सर्वं ब्रह्मेति यो वदेत् ।

महानिरयजालेषु स तेन विनियोजितः ॥

इसलिए, हम सभी जिज्ञासुओं को आशीर्वाद देते हैं कि वे अपने मन को वश में करें, शास्त्रों के अनुसार आचरण करें, गुरु के वचनों में अटूट श्रद्धा और विश्वास रखें, मन की शुद्धि प्राप्त करें और इस प्रकार वेदांत के अध्ययन के योग्य बनें।

--जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी

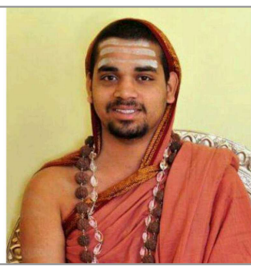


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



॥आत्मबोधः॥

॥ātmabodhaः॥



एवं निरन्तराभ्यस्ता ब्रह्मैवास्मीति
वासना

हरत्यविद्याविक्षेपान् रोगानिव
रसायनम् ॥३७॥

लगातार अभ्यास से बनी "मैं ब्रह्म हूँ"
की भावना अज्ञान और उससे पैदा
होने वाली बेचैनी को वैसे ही खत्म
कर देती है, जैसे दवा या रसायन
बीमारी को खत्म करते हैं।

विविक्तदेश आसीनो विरागो
विजितेन्द्रियः

भावयेदेकमात्मानं
तमनन्तमनन्यधीः ॥३८॥

किसी एकांत स्थान पर बैठकर,
मन को इच्छाओं से मुक्त करके और
इंद्रियों को वश में करके, उस
अद्वितीय आत्मा पर अटूट ध्यान
लगाएँ।

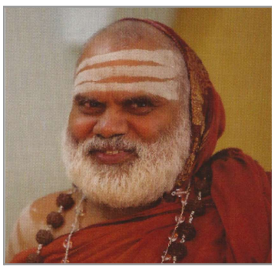
परम पूज्य ३५वें जगद्गुरु शंकराचार्य
श्री अभिनवविद्या तीर्थ महास्वामीजी

आत्मन्येवाखिलं दृश्यं प्रविलाप्य

धिया सुधीः

भावयेदेकमात्मानं निर्मलाकाशवत्सदा ॥३९॥

बुद्धिमान व्यक्ति को समझदारी से समस्त दृश्य-जगत को केवल आत्मा में ही विलीन कर देना चाहिए और स्वयं को
सदा आकाश की भाँति किसी भी वस्तु से अछूता (निर्विकार) मानना चाहिए।
(जारी रहेगा...)

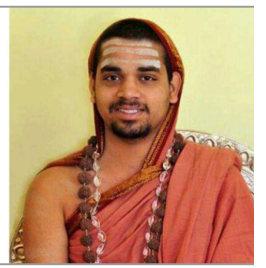


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



धर्मशास्त्र का मार्ग

इस भाग में हम प्रश्नोत्तर रूप में "धर्मशास्त्र का मार्ग" देखेंगे। "धर्मशास्त्र" से संबंधित हमारी शंकाओं के समाधान के लिए, पूज्यश्री स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, संस्थापक आचार्य, श्री स्वामी चिद्भवानंद आश्रम, वेदपुरी, थेनी, वैदिक शास्त्रों के अनुसार हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

सवाल: अगला सवाल है, वासनाओं से कैसे निपटें?

स्वामीजी: वासनाओं को संभालने के लिए, हमें होश में काम करना होगा। हमें इस पर खुद का आत्मनिरीक्षण करना होगा। प्रतिपक्ष भावना से, हमें हेल्दी एटीट्यूड और वासना डेवलप करनी होगी और उन्हें अनहेल्दी और नेगेटिव एटीट्यूड से बदलना होगा। हमें हमेशा सत्संग में रहना चाहिए, स्वस्थ दृष्टिकोण विकास करना चाहिए और भगवान से उनकी कृपा मांगनी चाहिए। गुरु और धर्मग्रंथों की मदद से, पूरी सच्चाई के ज्ञान से ही कोई खुद को वासनाओं से पूरी तरह अलग कर सकता है।

(यह सवाल अगस्त संस्करण(एडिशन) के सवाल-जवाब वाले हिस्से का अगला हिस्सा है)



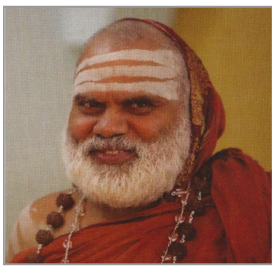
Jagadguru
Śankaracārya His
Holiness
Mahāsannidhānam
Śrī Śrī Śrī Bhārati
Tīrtha
Mahāswāmiji and
Pujyasri Swami
Omkanananda
Saraswati,
Founder Acharya,
Śrī Swami
Chidbhavananda
Ashram @
Vedapuri,
Pudukottai on May
13 - 14, 2017
(Vijaya Yatra)

सवाल: कृपया हमें
संध्या वंदन के महत्व
के बारे में बताएं।

स्वामीजी: हिंदू धर्म में 'संध्या वंदन' नाम की एक रोज़ाना की जाने वाली रस्म का विधान है। 'संध्या' का अर्थ है वह समय जब सूरज की स्थिति में बदलाव होता है – जैसे भोर (सुबह), दोपहर और शाम। 'वंदन' का अर्थ है सम्मान और विनम्रता के साथ नमन करना। इसलिए, संध्या वंदन सूर्य देव को नमस्कार करने का एक संक्षिप्त प्रार्थना-रूप है।

संध्या वंदन में कई गतिविधियां शामिल हैं, जैसे अर्घ्य प्रदान करना (भेंट चढ़ाना), ईश्वर का आह्वान करने के लिए प्रार्थना, मन को शांत करने के लिए सांस लेने की क्रियाएं (प्राणायाम), खुद को शुद्ध करना, जाने-अनजाने हुए पापों के लिए क्षमा मांगना, गायत्री मंत्र का जाप करना और ईश्वर को वापस उनके मूल स्थान पर स्थापित करना।

अर्घ्य प्रदान करने से समाज से नकारात्मक शक्तियां दूर होती हैं। ब्राह्मणों द्वारा की जाने वाली इस भेंट में 'अदृष्ट शक्ति' (अदृश्य शक्तियां) होती हैं, जो सच्चे प्रेम से उपजी शांति और सामाजिक कल्याण लाती हैं।

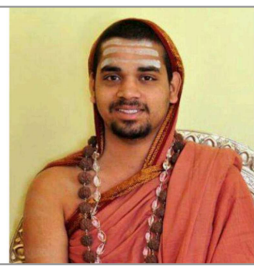


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



गायत्री मंत्र, गायत्री छंद में सविता देवता (सूर्य देव) को समर्पित एक शक्तिशाली मंत्र है। यह ईश्वर से ऐसी बुद्धि और स्पष्टता का आशीर्वाद मांगता है जो सही निर्णय लेने में मदद करे। यह मन को दृश्य (जो दिखाई देता है) और अदृश्य (जो दिखाई नहीं देता) दोनों तरह की शक्तियां प्रदान करता है। यह एक सामूहिक प्रार्थना है, जिसमें आस-पास के लोगों को भी शामिल किया जाता है। यदि पूरा समुदाय सही निर्णय ले, तो इससे आपसी तालमेल और सामूहिक कल्याण बढ़ता है। साथ ही, आजकल मानसिक बीमारियों के इलाज के लिए मंत्र जप (बार-बार मंत्र का उच्चारण) के फायदों का भी बड़े पैमाने पर प्रचार किया जा रहा है।

दिन भर की चुनौतियों का सामना करने के लिए मन को आराम की ज़रूरत होती है, लेकिन खाली दिमाग शैतान का घर होता है। मन को रोज़मर्रा की दुनिया से हटाकर प्रार्थना के शांत पलों से जोड़ने के फ़ायदे बहुत गहरे होते हैं, जो ऊपर से दिखाई नहीं देते। इससे ज्ञान और कर्म के बीच का टकराव खत्म होता है, जिससे गलतियों से बचा जा सकता है और सही रास्ते पर चला जा सकता है। इसलिए, संध्या वंदन शारीरिक और मानसिक सेहत के लिए एक बेहतरीन तरीका है, क्योंकि शांत और प्रार्थना में लगा मन, जो अपराध-बोध से मुक्त हो, सफलता की पक्की गारंटी है।

सवाल: संध्या वंदन करने के लिए क्या योग्यता होनी चाहिए?

स्वामीजी: संध्या वंदन करने के लिए उपनयन संस्कार ज़रूरी है। जन्म से मृत्यु तक एक व्यक्ति के लिए कुल चालीस संस्कार या रीति-रिवाज होते हैं, जिनमें पवित्र धागा या उपवीत धारण करने का उपनयन संस्कार भी शामिल है। यह संस्कार वेदों की पढ़ाई शुरू करने की योग्यता तय करता है, जो हिंदू धर्म के मुख्य ग्रंथ हैं।

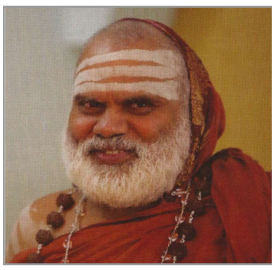
वर्ण धर्म के तहत पहले तीन वर्णों - ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य - के लिए उपनयन संस्कार ज़रूरी है। यह आम तौर पर 7 (गर्भाष्टम) से 13 साल की उम्र के बीच, विषम उम्र (जैसे 7, 9, 11, 13) में लड़कों के लिए किया जाता है। बहुत बुद्धिमान बच्चे 5 साल की उम्र में ही इसके योग्य हो जाते हैं। उपनयन संस्कार को दूसरा जन्म माना जाता है, इसलिए 'द्विज' (दो बार जन्म लेने वाले) को संध्या वंदन को 'नित्य कर्म' या रोज़ाना की जाने वाली रस्म के तौर पर करना चाहिए। इस आसान रस्म को ठीक से सीखने के बाद, उपनयन संस्कार के बाद आने वाले पहले 'आवनि अविटम्' पर बच्चा गुरु के साथ (पुराने समय में गुरुकुल में) वेदों की पढ़ाई शुरू करने की तैयारी करता है।

व्यक्ति मृत्यु तक या संन्यास की रस्म के ज़रिए औपचारिक रूप से सब कुछ छोड़ने तक इस रस्म को जारी रखता है। संन्यास के बाद, संध्या काल में की जाने वाली प्रार्थनाएँ अलग होती हैं।

सवाल: ड्रेस कोड और प्रक्रिया के बारे में ज़रूरी बातें क्या हैं? क्योंकि हम देखते हैं कि कई लोग जल्दबाज़ी में सिर्फ़ एक धोती, या तौलिया या शॉर्ट्स पहनकर ही संध्या वंदन करते हैं। क्या यह सही है?

स्वामीजी: तय ड्रेस कोड के अनुसार धोती पहननी चाहिए और उसके ऊपर एक और कपड़ा लपेटना चाहिए। हम सब इस बात से सहमत हैं कि जब कोई सैनिक अपनी यूनिफ़ॉर्म / वर्दी पहनता है, तो उसमें हिम्मत और समर्पण की भावना आती है। ठीक वैसे ही, हम सभी को हर मौके के हिसाब से सही कपड़े पहनने चाहिए। बताए गए कपड़ों को पहनने से ध्यान और उत्साह ज़रूर बढ़ सकता है। जल्दबाज़ी के समय में ड्रेस कोड से समझौता करना कोई नियम नहीं बन सकता। हालाँकि, श्रद्धा के साथ लगातार अनुष्ठान करने से समय के साथ व्यक्ति में बदलाव आता है और वह सही ड्रेस कोड को अपना लेता है।

(जारी रहेगा..)

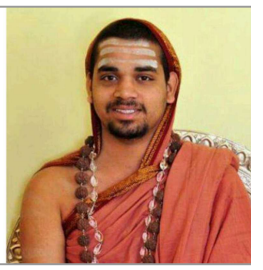


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



GOLDEN SAYINGS OF JAGADGURU ŚRĪ ĀDI ŚANKARĀCHARYA

जगद्गुरु श्री आदि शंकराचार्य की सुनहरी बातें

इससे हम एक नया आर्टिकल, “जगद्गुरु श्री आदि शंकराचार्य की सुनहरी बातें” पेश करने जा रहे हैं, जो श्री आदि शंकराचार्य की रचनाओं का संग्रह(कलेक्शन) है।



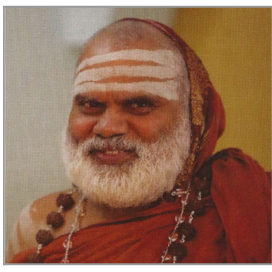
जब तक अद्वैत ब्रह्म, जो सबका आधार है, को नहीं जाना जाता, तब तक दुनिया असली लगती है। यह सीप के खोल में चांदी होने का भ्रम जैसा है। (आत्मबोध : 7)

ज़मीन के नीचे दबे खजाने को पाने और उस पर कब्ज़ा करने के लिए किसी भरोसेमंद इंसान की बातें, खुदाई, उस पर चढ़ी हुई पटिया को हटाना और असल में उस पर कब्ज़ा करना ज़रूरी है। सिर्फ़ आवाज़ लगाकर उसे पुकारने से वह बाहर नहीं आता। (विवेकचूड़ामणि : 67)

हर समय इच्छाओं का त्याग शम कहलाता है और अंगों के बाहरी कामों पर रोक दम कहलाती है। (अपरोक्षानुभूति : 6)

मनुष्य उसे अपने अभ्यास में नहीं लाता, तब तक न तो उसकी जीत हो सकती है और न ही हार।
(मांडकोपनिषद् पर कमेंट्री : 3.1.6)

आत्मा, जो बिना काम की, बिना गुण वाली, सत्व और दूसरे गुणों से रहित और बिना बदलती है, अपने ऊपर उन गुणों को डाल लेती है जो उसके नहीं हैं और सोचती है, ‘मैं ही कर्ता हूँ, भोक्ता हूँ, सुखी हूँ, दुखी हूँ, दुबला-पतला हूँ, मोटा हूँ, इंसान हूँ, फलाने का बेटा हूँ, फलाने का पोता हूँ’। (श्वेताश्वतरोपनिषद् 6.12 पर टिप्पणी)

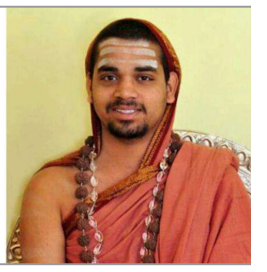


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



Our Website link : <https://voiceofjagadguru.com/voj/>

Telegram Channel : <https://t.me/voiceofjagadguru>

Instagram Channel :

https://www.instagram.com/stories/voice_of_jagadguru_voj/3601249542534134684?igsh=MW90YW13N2c5b2hqaA==

WhatsApp Community Channel: <https://chat.whatsapp.com/Ly4wlaTu8Kc3sjjEYU8KGu>

YouTube Channel : <https://youtube.com/@jagad-guru-channel?si=brkLFqiz8sZJ6UII>

Editorial Board		
Sri P A Murali	Hon' Advisor	Administrator & CEO, Sri Sringeri Mutt & It's Properties, Sringeri
Sri S N Krishnamurthy	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri Tangirala Shiva Kumara Sharma	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri B Vijay Anand	Web Director	Coimbatore
Smt B Srimathi Veeramani	Web Asst Director & Chief Editor	Tirunelveli
Sri K M Kasiviswanathan	Hon' Editor	Tirunelveli
Sri M Venkatachalam & Team	Translator/writer	Tiruvananthapuram